वैदिक साहित्यका परिचय
'कल्पसूत्र'

(पं० श्रीरामगोविन्दजी त्रिवेदी)

'कल्प' शब्दके कितने ही अर्थ हैं—विधि, नियम और न्याय आदि। थोड़े अक्षरोंवाले, साररूप तथा निर्दोष वाक्यका नाम सूत्र है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि विधियों, नियमों अथवा न्यायोंके जो संक्षिप्त, सारवान् और दोषशून्य वाक्यसमूह हैं, उनका नाम कल्पसूत्र है। कल्पसूत्रोंको वेदाङ्ग भी कहा जाता है। मतलब यह कि कल्पसूत्र वेदोंके अंश या हिस्से हैं।

वस्तुतः हिंदुत्व, हिंदू-धर्म और हिंदू-संस्कृतिके प्राण कल्पसूत्र ही हैं। हिंदू-धर्म ही क्या, संसारके सभी प्रसिद्ध धर्मोंकी जड़ कर्मकाण्ड है—उनका मूल क्रियात्मक रूप ही है। कल्पसूत्रोंकी तो आधारशिला ही कर्मकाण्ड है तथा हिंदू-धर्मके सारे कर्म, सब संस्कार, निखिल अनुष्ठान और समूचे रीति-रस्म प्रायः कल्पसूत्रोंसे ही उत्पन्न हैं। इसलिये हिंदू-जीवनके समस्त नित्य, नैमित्तिक, काम्य और निष्काम कर्म, सारी क्रियाएँ, सम्पूर्ण संस्कृति तथा अशेष अनुष्ठान समझनेके लिये एकमात्र अवलम्ब ये सूत्र ही हैं। प्राचीन हिंदुओंके सामाजिक आचार-विचार, उनकी जीवनचर्या और उनके कर्मानुष्ठान आदिको ये सूत्र बड़ी ही सुन्दरता और प्राञ्जलतासे बताते हैं। धर्मानुष्ठानोंमें मानव-वृत्तियोंको संलग्न करना तथा धार्मिक विधियों और नियमोंमें व्यक्तियों और समाजका जीवन संयत करना, इन सूत्रोंका खास उद्देश्य है और सचमुच नियमबद्ध एवं संयत करके इन सूत्रोंने हिंदू-जीवन और समाजको दिव्य तथा भव्य बनानेमें बड़ी सहायता की है।

कल्पसूत्र तीन तरहके होते हैं—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। वैदिक संहिताओंमें कहे गये यज्ञादि-विषयक

कल्याण (कल्याण-गीताप्रेस)

विधान और विवरण देनेवाले सूत्रोंको 'श्रौतसूत्र' कहा जाता है। गृहस्थके जन्मसे लेकर मृत्युतकके समस्त कर्तव्यों और अनुष्ठानोंका जिनमें वर्णन है, उन्हें 'गृह्यसूत्र' नाम दिया गया है। विभिन्न पारमार्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कर्तव्यों, आश्रमों, विविध जातियोंके कर्तव्यों, विवाह, उत्तराधिकार आदिका जिनमें विवरण है, उनकी संज्ञा 'धर्मसूत्र' है। पातञ्जल महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-में लिखा है—ऋग्वेदकी २१, यजुर्वेदकी १०१, सामवेदकी १,००० और अथर्ववेदकी ९ शाखाएँ हैं अर्थात् सब मिलाकर चारों वेदोंकी १,१३१ शाखाएँ हैं; परंतु इन दिनों हमारी इतनी दयनीय दशा है कि इन शाखाओंके नामतक नहीं मिलते। प्राचीन साहित्यसे पता चलता है कि जितनी शाखाएँ थीं, उतनी ही संहिताएँ थीं, उतने ही ब्राह्मण और आरण्यक थे, उतनी ही उपनिषदें थीं और उतने ही कल्पसूत्र भी थे; परंतु आजकल इनमेंसे कोई भी पूरा-का-पूरा नहीं मिलता। किसी शाखाकी संहिता मिलती है, किसीकी नहीं; किसीका केवल ब्राह्मण-ग्रन्थ मिलता है तो किसीका कल्पसूत्रमात्र। आश्वलायन शाखावालोंकी अपनी कोई संहिता नहीं मिलती; उनके केवल कल्पसूत्र मिलते हैं। बेचारे शाकल-संहिताको ही अपनी संहिता मानते हैं और ऐतरेय शाखावालोंके ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदोंसे ही अपने काम चलाते हैं। शौनकके 'चरण-व्यूह' में चरक-शाखाको विशिष्ट स्थान दिया गया है; परंतु न तो इस शाखाकी कोई संहिता या ब्राह्मण ही मिलते हैं, न उसकी उपनिषदें आदि ही उपलब्ध हैं। काठक शाखाकी संहिता तो मिलती है; परंतु ब्राह्मण, आरण्यक नहीं। मैत्रायणी और राणायणीय शाखाओंकी भी यही बात है। अथर्ववेदकी पिप्पलाद-शाखाकी तो केवल संहिता ही मिलती है। संक्षेपमें यह समझिये कि जैसे न्याय और वैशेषिक दर्शन तो मिलते हैं; परंतु उनके सम्प्रदाय नहीं मिलते तथा सौर और गाणपत्य सम्प्रदाय तो मिलते हैं; परंतु उनके दर्शनशास्त्र नहीं मिलते; ठीक इसी तरह किसीकी केवल शाखा ही मिलती है, किसीकी संहिता, किसीका ब्राह्मण तथा किसीकी केवल संज्ञाभर मिलती है और किसीका तो नामतक भी नहीं मिलता। कल्पसूत्र भी तो शाखाओंके अनुसार १,१३१ उपलब्ध होने चाहिये; परंतु इन दिनों प्रायः ४० पाये जाते हैं।

कहनेको तो हम सभी गला फाड़कर अपनेको वैदिक धर्मानुयायी कहते नहीं अघाते; परंतु वैदिक साहित्यके प्रति जो हमारी उपेक्षा है, वेदाध्ययनके लिये जो हमारी निरादर-बुद्धि है, उसको देखते हुए हमें ऐसा विश्वास हो रहा है कि मिले हुए ग्रन्थ भी लुप्त और उच्छिन्न हो जायँगे। चारों वेदोंकी जो सब मिलाकर ११ संहिताएँ मिली हैं, वे भी यूरोपियनोंकी कृपासे। लाखों रुपये खर्च करके यूरोपियनोंने ही यूरोपके विविध देशोंमें इन संहिताओंको छापा है। भारतवर्षमें तो ११ मेंसे केवल ५ संहिताएँ ही छापी गयी हैं तो भी कदाचित् विश्वसनीय पाठ नहीं हैं; सबमें अशुद्धियाँ हैं। व्याकरण रट लिया और बन पड़ा तो कुछ ज्योतिष तथा कुछ काव्यकी पोथियाँ देख डालीं और यदि महापण्डित या धर्मगुरु बननेकी इच्छा हुई तो न्याय-वेदान्तकी परीक्षाएँ दे दीं। बस, भोली जनतामें चारों वेदोंके वक्ता—ज्ञाता बन गये; वेद-विज्ञानकी घटा और छटा बाँधने लगे—**'वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ'**, **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।'** जनताको, शिष्यों और यजमानोंको क्या पता कि ये 'महापण्डित', 'धर्म-गुरु' वेद तो क्या, वेदका 'व' भी नहीं जानते। मनुजीने तो स्पष्ट ही लिखा है कि 'जो वेद नहीं जानता, वह शूद्र है, जो वेदज्ञ नहीं, उसका विवाह मत करो और जो वेद-ज्ञाता नहीं, उस ब्राह्मणको न पूजो, न खिलाओ, न उससे श्राद्ध कराओ।' परंतु यहाँ जब धर्म और उस वेदकी ही परवा नहीं, जिसे हमारे शास्त्र और पूर्वज नित्य मानते हैं, तब मनु और याज्ञवल्क्यको कौन पूछता है? संक्षेपमें यह समझिये कि यदि कुछ वेद और धर्मके भक्त इस दिशामें महासाहस लेकर वेद-प्रचार और वेद-प्रकाशनकी ओर नहीं पड़ते तो उपलब्ध वैदिक साहित्यके भी लुप्त हो जानेका डर है।

यहाँ मुख्य बात यह समझिये कि यदि यूरोपीय विद्वानोंकी कृपा नहीं हुई होती तो इन दिनों वैदिक साहित्यके अमूल्य ग्रन्थ इन कल्पसूत्रोंके दर्शन भी हमें दुर्लभ होते। यूरोपियनोंके अथक परिश्रमके ही कारण

इन सूत्रोंके दर्शन हमें मिल रहे हैं। यदि विद्या-व्यसनी यूरोपीय भी इस क्षेत्रसे उदास रहते तो हमें कदाचित् एक भी कल्पसूत्र नहीं दिखायी देता और हिंदू-धर्मके प्रति हम भीषण अंधकारमें ही रहते तो वेदों और हिंदू-धर्मके सेवक हम हुए या यूरोपियन?

अब इस बातपर ध्यान दीजिये कि हिंदू-धर्म और हिंदू-संस्कृतिके प्राण ये कल्पसूत्र क्या हैं? श्रौत या वैदिक यज्ञ चौदह प्रकारके हैं—सात 'हविर्यज्ञ' और सात 'सोमयज्ञ'। अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध और सौत्रामणी—ये सातों चरु पुरोडाशद्वारा हविसे सम्पन्न होते हैं, इसलिये ये 'हविर्यज्ञ' कहलाते हैं। अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र और आप्तोर्यामको 'सोमयज्ञ' कहा जाता है। इन सातोंमें सोमरसका प्राधान्य रहता है।

कई संहिताओं और आश्वलायन, लाट्यायन आदि श्रौतसूत्रोंमें इन चौदहों यज्ञोंका विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें संदेह नहीं कि इन दिनों इन यज्ञोंका प्रचार नहीं है, परंतु गृह्यसूत्रोंके यज्ञ नित्यकर्म अर्थात् आवश्यक कर्तव्य माने जाते हैं; इसलिये उन्हें पाक या प्रधान यज्ञ कहा जाता है। पाक-यज्ञोंमेंसे कुछ तो ज्यों-के-त्यों हिंदू समाजमें प्रचलित हैं और कुछ रूपान्तरित होकर।

गृह्यसूत्रकारोंने सात प्रकारके गृह्य या पाक-यज्ञ माने हैं जैसे—'पितृ-यज्ञ' या 'पितृ-श्राद्ध'—यह सभी हिंदुओंमें मूलरूपमें ही प्रचलित है। 'पार्वण-यज्ञ' अर्थात् पूर्णिमा और अमावास्याके दिन किया जानेवाला यज्ञ। इसे इस समय भी यथावत् किया जाता है। 'अष्टका-यज्ञ'—यह अवश्य ही बहुत रूपान्तर प्राप्त कर चुका है। 'श्रावणी-यज्ञ'—यह अबतक काफी प्रचलित है। 'आश्वयुजी-यज्ञ' अर्थात् आश्विन मासमें किया जानेवाला यज्ञ, जो कोजागरा लक्ष्मीपूजाका रूप धारण कर चुका है। 'आग्रहायणी-यज्ञ'—यह अगहनमें किया जानेवाला यज्ञ 'नवान्न' का अनुकल्प बन चुका है। 'चैत्री-यज्ञ' अर्थात् चैत्रमें किया जानेवाला यज्ञ, जो बिलकुल दूसरा रूप ग्रहण कर चुका है।

चौदह श्रौतयज्ञों और सात पाकयज्ञोंके सिवा धर्मसूत्रों और गृह्यसूत्रोंमें इन पाँच महायज्ञोंका वर्णन है—देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ और मनुष्ययज्ञ। हवनको 'देवयज्ञ', बलिरूपमें अन्न आदि दान करनेको 'भूतयज्ञ', पिण्ड-दान और तर्पणको 'पितृयज्ञ', वेदोंके अध्ययन-अध्यापन अथवा मन्त्रपाठको 'ब्रह्मयज्ञ' तथा अतिथिको अन्न आदि देनेको 'मनुष्ययज्ञ' कहा जाता है। ये पाँचों महायज्ञ भी अबतक ज्यों-के-त्यों प्रचलित हैं।

उक्त सूत्रोंमें इन संस्कारोंका बहुत सुन्दर विवरण है—गर्भाधान, पुंसवन अर्थात् पुत्रजन्मानुष्ठान, सीमन्तोन्नयन अर्थात् गर्भवती स्त्रीका केशविन्यास, जातकर्म अर्थात् संतान होनेपर आवश्यकीय अनुष्ठान, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, उपनयन, वेदाध्ययनके समय महानाम्नीव्रत, महाव्रत, उपनिषद्व्रत, गोदानव्रत, समावर्तन अर्थात् पठनके अन्तमें स्नानविशेष, विवाह, अन्त्येष्टि अर्थात् मृतसंस्कार। ये सोलहों संस्कार भी प्रचलित हैं।

इस प्रकार १४ श्रौतयज्ञ, ७ पाकयज्ञ, ५ महायज्ञ और १६ संस्कार मिलकर ४२ कर्म हमारे लिये कल्पसूत्रकारोंने बताये हैं। सूत्रोंमें इन बयालीसोंका विस्तृत विवरण पढ़नेपर अपने पूर्वजोंकी सारी जीवन-लीला दर्पणकी तरह दिखायी देने लगती है। संसारकी सबसे प्राचीन आर्यजातिकी इस जीवन-लीलाका इतिहास जानने और उसका सम्यक् अध्ययन-परिशीलन करनेके लिये ही यूरोपकी जातियोंने पानीकी तरह रुपये बहाकर इन समस्त सूत्रोंको, टीका-टिप्पणियोंके साथ सुसम्पादित कर प्रकाशित किया है। कहाँ उनकी आदर्श ज्ञान-पिपासा तथा विद्या-प्रेम और कहाँ अपने बाप-दादोंके धर्म-कर्म, सभ्यता-संस्कृति और स्वरूप-इतिहास जाननेके बारेमें हमारी घृणित उपेक्षा! **धिग् जीवनम्!!**

हाँ, तो हम कह रहे थे कि सूत्रकारोंने ४२ कर्म बताये हैं; परंतु साथ ही सूत्रकार ऋषियोंने सत्य, सद्गुण और सदाचारपर भी बहुत जोर दिया है। धर्मसूत्रकार गौतम चत्वारिंशत् कर्मवादी हैं—उन्होंने अन्त्येष्टि और निष्क्रमणको संस्कार नहीं माना है—सोलहमें १४ ही संस्कार माने हैं। अतः उन्होंने गौतमधर्मसूत्र (८। २४। २५)-में लिखा है—'जो ४० संस्कारोंसे तो युक्त हैं; परंतु

सद्गुणसे शून्य हैं, वे न तो ब्रह्मलोक जा सकेंगे, न ब्रह्मको पा सकेंगे। हाँ, जो नित्य-नैमित्तिक यज्ञोंको करते हैं और काम्य-कर्मोंके लिये कोई चेष्टा नहीं करते अथवा चेष्टा करनेमें असमर्थ हैं, वे भी सद्गुणों (सत्य, सदाचार आदि)-से युक्त होनेपर ब्रह्मलोकको जा सकेंगे तथा ब्रह्मको भी पा सकेंगे।' इसी तरह वसिष्ठधर्मसूत्र (६।३)-में भी कहा गया है—'जैसे चिड़ियोंके बच्चे पंख हो जानेपर घोंसलेको छोड़कर चले जाते हैं, वैसे ही वेद और वेदाङ्ग भी सद्गुणशून्य मनुष्यका त्याग कर देते हैं।' इन वचनोंसे मालूम होता है कि सत्य और सदाचारको हमारे सूत्रकारोंने कितना महत्त्व दिया है—एक तरहसे उन्होंने सत्य और सदाचारको हिंदू-धर्मकी भित्ति ही माना है और हमको उनसे यही महती शिक्षा भी मिलती है।

जैसे ऋग्वेदके ऐतरेय और कौषीतकि नामके दो ब्राह्मण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, वैसे ही इसके आश्वलायन और शांखायन नामके दो कल्पसूत्र भी अतीव विख्यात हैं। आश्वलायन श्रौतसूत्रमें १२ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय वैदिक यज्ञोंके विवरणसे पूर्ण है। कहा जाता है कि आश्वलायन ऋषि शौनक ऋषिके शिष्य थे और ऐतरेय आरण्यकके अन्तिम दो अध्याय गुरु और शिष्यने मिलकर बनाये थे। ऐतरेय ब्राह्मण और आरण्यकमें जो वैदिक यज्ञ विस्तृतरूपसे विवृत किये गये हैं, संक्षेपमें उन्हींके विधान आदिका निर्देश करना इस श्रौतसूत्रका उद्देश्य है। इसपर गार्ग्यनारायणिकी संस्कृत-वृत्ति है।

आश्वलायन-गृह्यसूत्र चार अध्यायोंमें विभक्त है। प्रथम अध्यायमें विवाह, पार्वण, पशुयज्ञ, चैत्ययज्ञ, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, गोदानकर्म, उपनयन और ब्रह्मचर्याश्रमकी विवृति है। द्वितीयमें श्रावणी, आश्वयुजी, आग्रहायणी, अष्टका, गृहनिर्माण और गृहप्रवेशका विवरण है। तृतीयमें पञ्चमहायज्ञोंका वर्णन है। इन यज्ञोंको प्रतिदिन सम्पन्न करके हमारे पूर्वज अन्न-जल ग्रहण करते थे और इन दिनों भी कुछ लोग ऐसा ही करते हैं। इसी अध्यायमें ऋग्वेदके विभिन्न मण्डलोंके ऋषियोंके नाम पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त सुमन्तु, जैमिनि, वैशम्पायन, पैल तथा सूत्रों, भाष्यों और भारत एवं महाभारतके प्रणेताओंके भी नाम पाये जाते हैं। चतुर्थ अध्यायमें अन्त्येष्टि और श्राद्धका वर्णन है।

आश्वलायन गृह्यसूत्रपर गार्ग्यनारायणि, कुमारिल भट्ट और हरदत्त मिश्रकी वृत्ति, कारिका और व्याख्या है। शांखायन श्रौतसूत्र अठारह अध्यायोंमें विभाजित है। दर्शपूर्णमास आदि वैदिक यज्ञोंका इसमें भी विवरण है; साथ ही वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, पुरुषमेध और सर्वमेध आदि विशाल यज्ञोंकी विस्तृत विवृति भी है।

शांखायन गृह्यसूत्र छः अध्यायोंमें पूर्ण हुआ है। प्रथम अध्यायमें पार्वण, विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, गर्भरक्षण, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, अन्नप्राशन, चूडाकरण और गोदानकर्मका विवरण है। द्वितीयमें उपनयन और ब्रह्मचर्याश्रमका वर्णन है। तृतीयमें स्नान, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, वृषोत्सर्ग, आग्रहायणी और अष्टका आदिका विवरण है। चतुर्थमें श्राद्ध, अध्यायोपाकरण, श्रावणी, आश्वयुजी, आग्रहायणी और चैत्रीका उल्लेख है। पञ्चम और षष्ठ अध्यायोंमें कुछ प्रायश्चित्तोंका वर्णन है। शांखायन-शाखाकी संहिता नहीं पायी जाती। इस वेदकी केवल शाकल-संहिता ही छपी है।

बहुत लोगोंका मत है कि वसिष्ठधर्मसूत्र ऋग्वेदका ही धर्मसूत्र है। इसके टीकाकार गोविन्द स्वामीका भी ऐसा ही मत है। यह तीस अध्यायोंमें विभक्त है। पहलेमें साधारण विधि, आर्यावर्तकी सीमा, पञ्चमहापातक और छः विवाह-पद्धतियोंका वर्णन है। दूसरेमें विविध जातियोंके कर्तव्यका निर्देश है। तीसरेमें वेद-पाठकी आवश्यकता और चौथेमें अशुद्धियोंका विचार है। चौथे अध्यायमें सूत्रकारने मनुके अनेक वचनोंको उद्धृत किया है, जिससे विदित होता है कि अत्यन्त प्राचीन कालमें कोई मनु-सूत्र भी था, जिसके आधारपर ही वर्तमान मनुस्मृति बनी है। पाँचवेंमें स्त्रियोंका कर्तव्य, छठेमें सदाचार, सातवेंमें ब्रह्मचर्य, आठवेंमें गृहस्थ-धर्म, नवेंमें वानप्रस्थ-धर्म और दसवेंमें भिक्षुधर्म वर्णित है। ग्यारहवेंमें अतिथि-सेवा, श्राद्ध और उपनयनकी बातें हैं। बारहवेंमें स्नातक-धर्म, तेरहवेंमें वेद-पाठ और चौदहवेंमें खाद्य-विचार विवृत हैं। पंद्रहवेंमें दत्तक-पुत्र-ग्रहण, सोलहवेंमें राजकीय-विधि और सतरहवेंमें उत्तराधिकारका वर्णन है। अठारहवेंमें चाण्डाल, वैण,

अन्त्यावसायी, राभक, पुल्कस, सूत, अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, पारशव आदि दस मिश्र या मिली हुई जातियोंका विवरण है। उन्नीसवेंमें राजधर्म विवृत है। बीसवेंसे अट्ठाईसवेंतकमें प्रायश्चित्त और उनतीसवें तथा तीसवें अध्यायोंमें दान-दक्षिणाका विवरण है।

सामवेदकी दो शाखाओंके दो श्रौतसूत्र अत्यन्त विख्यात हैं—कौथुमशाखाका लाट्यायन श्रौतसूत्र या मशक श्रौतसूत्र और राणायणीय शाखाका द्राह्यायण श्रौतसूत्र। दोनोंमें वैदिक यज्ञोंका खूब सुन्दर विश्लेषण और विवरण है।

सामवेद (कौथुमशाखा)-का गोभिलगृह्यसूत्र चार प्रपाठकोंमें विभक्त है। प्रथम प्रपाठकमें साधारण विधि, ब्रह्मयज्ञ, दर्शपूर्णमास आदिका विवरण है। द्वितीयमें विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, चूडाकरण और उपनयन आदि विवृत हैं। तृतीयमें ब्रह्मचर्य, गोपालन, गोयज्ञ, अश्वयज्ञ और श्रावणी आदिका वर्णन है। चतुर्थमें विविध अन्वष्टका-काम्यसिद्धियोंके उपयोगी कर्म गृहनिर्माण आदिकी विवृति है।

सामवेदका गौतमधर्मसूत्र अत्यन्त विख्यात है। यह अट्ठाईस अध्यायोंमें पूर्ण हुआ है। प्रथम और द्वितीय अध्यायोंमें उपनयन और ब्रह्मचर्य; तृतीयमें भिक्षु (संन्यासी) एवं वैखानस (वानप्रस्थ)-का धर्म और चतुर्थ तथा पञ्चम अध्यायोंमें गृहस्थका धर्म विवृत है। इस प्रसंगमें गौतमने इन आठ प्रकारके विवाहोंका उल्लेख किया है—ब्राह्म, प्राजापत्य, आर्ष, दैव, गान्धर्व, आसुर, राक्षस और पैशाच। प्रथमके चार उत्तम हैं और अन्तके चार अधम हैं। पञ्चम अध्यायमें अठारह प्रकारकी मिली हुई जातियोंका या मिश्र जातिका उल्लेख है। षष्ठमें अभिवादन, सप्तममें आपत्कालीन वृत्ति-समूह और अष्टममें चालीस संस्कारोंका उल्लेख है। नवममें स्नातक-धर्म, दशममें विभिन्न जाति-धर्म, एकादशमें राजधर्म, द्वादशमें राजकीय विधि, त्रयोदशमें विचार और साक्ष्य-ग्रहण, चतुर्दशमें अशुद्धि-विचार, पञ्चदशमें श्राद्ध-नियम, षोडशमें वेद-पाठ, सप्तदशमें खाद्य-विचार और अष्टादशमें स्त्री-विवाह आदि हैं। एकोनविंशसे सप्तविंश अध्यायोंमें प्रायश्चित्त-विवरण है। अष्टाविंश अध्यायमें उत्तराधिकारका विचार है।

यजुर्वेदके दो भेद हैं—कृष्ण और शुक्ल। कृष्ण-यजुर्वेदके ग्रन्थ अन्य सभी वेदोंसे अधिक मिलते हैं। इसकी संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, कल्पसूत्र, प्रातिशाख्य आदि प्रायः अधिकांश मिलते हैं। इस वेदकी मैत्रायणी शाखाका मानवधर्मसूत्र पाया जाता है। इसके अतिरिक्त बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, भारद्वाज, काठक आदि कितने ही सूत्र-ग्रन्थ इस वेदके मिले हैं।

बौधायन-श्रौतसूत्र उन्नीस प्रश्नोंमें पूर्ण हुआ है। बौधायन गृह्यसूत्र और बौधायन-धर्मसूत्रमें चार-चार प्रश्न या खण्ड हैं। बौधायन-कल्पसूत्रमें कर्मान्तसूत्र, द्वैधसूत्र तथा शुल्बसूत्र (यज्ञवेदी-निर्माणके लिये रेखागणितके नियम) आदि भी पाये जाते हैं। बौधायनने लिखा है—'अवन्ती, मगध, सौराष्ट्र, दक्षिण, उपावृत, सिन्धु और सौवीरके निवासी मिश्रजाति हैं।' इससे विदित होता है कि बौधायनके समय, १,२५० ख्रीष्टपूर्वमें इन प्रदेशोंमें अनार्य भी रहते थे। आगे चलकर लिखा गया है—'जिन्होंने आरट्ट, कारस्कर, पुण्ड्र, सौवीर, बङ्ग, कलिङ्ग आदिका भ्रमण किया है, उन्हें पुनस्तोम और सर्वपृष्ठा यज्ञ करने पड़ते हैं।' इससे मालूम पड़ता है कि आर्य लोग इन प्रदेशोंको हीन समझते थे।

बौधायन-धर्मसूत्रके पहले प्रश्नमें ब्रह्मचर्य-विवरण, शुद्धा-शुद्ध-विचार, मिश्रजाति-वर्णन, राजकीय विधि और आठ तरहके विवाहोंकी बातें हैं। दूसरे प्रश्नमें प्रायश्चित्त, उत्तराधिकार तथा स्त्रीधर्म, गृहस्थधर्म, चार आश्रम और श्राद्धका विवरण है। तीसरेमें वैखानस आदिके कर्तव्य और चान्द्रायण आदि प्रायश्चित्तोंका वर्णन है। चौथेमें काम्य-सिद्धि आदि विवृत हैं।

आपस्तम्बके भी सारे कल्पसूत्र पाये जाते हैं। आपस्तम्ब आन्ध्रमें उत्पन्न हुए थे। द्रविड़ और तैलङ्ग ब्राह्मण अपनेको आपस्तम्ब-शाखी और अपनी संहिताको तैत्तिरीय संहिता कहते हैं। आपस्तम्बकल्पसूत्र तीस प्रश्नोंमें परिपूर्ण हुआ है। प्रथम चौबीस प्रश्न श्रौतसूत्र हैं, पचीसवाँ प्रश्न परिभाषा है, छब्बीसवाँ और सत्ताईसवाँ प्रश्न गृह्यसूत्र है। अट्ठाईसवाँ और उनतीसवाँ प्रश्न धर्मसूत्र है और तीसवाँ शुल्बसूत्र है। आपस्तम्बगृह्यसूत्रमें ब्रह्मचर्यद्वारा शास्त्रशिक्षा, गृह-निर्माण, मासिक श्राद्ध, विवाह आदि संस्कार तथा श्रावणी,

अष्टका आदिका विवरण है। आपस्तम्बधर्मसूत्रके प्रथम प्रश्नमें ब्रह्मचर्य, शास्त्रशिक्षा, खाद्य-विचार और प्रायश्चित्तकी बातें हैं। द्वितीयमें चार आश्रमों और राजकीय विधिकी बातें हैं।

हिरण्यकेशी आपस्तम्बके पीछेके पुरुष हैं। हिरण्यकेशी-कल्पसूत्रोंकी रचना आपस्तम्बके कल्पसूत्रोंको सामने रखकर की गयी है। ये सब तैत्तिरीय शाखाके कल्पसूत्र हैं। हिरण्यकेशीका दूसरा नाम सत्याषाढ है। शुक्लयजुर्वेदके (माध्यन्दिन और काण्व दोनोंके) दो कल्पसूत्र अत्यन्त प्रसिद्ध हैं—कात्यायन-श्रौतसूत्र और पारस्कर-गृह्यसूत्र। कात्यायन-श्रौतसूत्रके अठारह अध्याय इस वेदके शतपथ-ब्राह्मणके नौ काण्डोंके क्रमानुवर्ती हैं। अवशिष्ट अध्याय सौत्रामणी, अश्वमेध, नरमेध, सर्वमेध आदिके विवरणोंसे पूर्ण हैं। व्रात्योंके विवरणमें मगधके ब्रह्मबन्धुओंका भी उल्लेख है। ब्रह्मण्यानुष्ठानसे शून्य अधम ब्राह्मणोंको ब्रह्मबन्धु कहा गया है।

पारस्कर-गृह्यसूत्र नौ काण्डोंमें पूर्ण हुआ है। प्रथममें विवाह, गर्भाधान आदि संस्कारोंका विवरण है। द्वितीयमें कृषि-प्रारम्भ, विद्या-शिक्षा, श्रावणी आदिका विवेचन है। तृतीयमें गृह-निर्माण, वृषोत्सर्ग, श्राद्ध आदिका वर्णन है। अन्य गृह्यसूत्रोंकी तरह ही इसके भी अन्यान्य काण्डोंके विवरण हैं।

अबतक जितने कल्पसूत्रोंका उल्लेख हो चुका है, उनके अतिरिक्त भी कुछ कल्पसूत्र पाये जाते हैं; किंतु उनकी प्रामाणिकतामें संदेह है। इसीलिये यहाँ उनका उल्लेख नहीं किया गया है। उल्लिखित कल्पसूत्रोंपर अनेकानेक खण्डित और अखण्डित भाष्य-टीकाएँ भी मिलती हैं; परंतु अधिकांश हस्तलिखित और अप्रकाशित दशामें ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन), इम्पीरियल लाइब्रेरी (कलकत्ता और दिल्ली), भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (पूना) तथा देश-विदेशकी विभिन्न लाइब्रेरियोंमें पड़ी हैं। यदि उन्हें छापें तो यूरोपीय विद्वान् ही; हम हिंदुओंको तो कुछ भी परवा नहीं।

वैदिक संहिताओंका अर्थ, तत्त्व और रहस्य समझनेके लिये जैसे ब्राह्मण, आरण्यक, प्रातिशाख्य, निरुक्त, निघण्टु, मीमांसा, बृहद्देवता, अनुक्रमणी, शिक्षा, चरणव्यूह आदि-आदिका अध्ययन आवश्यक है, वैसे ही, बल्कि कहीं-कहीं उनसे भी अधिक आवश्यक कल्पसूत्रोंका पठन है। श्रौतसूत्रोंसे यज्ञ-रहस्य समझनेमें आश्चर्यजनक सहायता मिलती है। गृह्यसूत्रोंसे स्थल-विशेषमें अद्भुत साहाय्य प्राप्त होता है। प्राचीन हिंदू-जीवन, प्राचीन हिंदूसमाज और प्राचीन हिंदूधर्म समझनेके लिये तो ये सूत्र अद्वितीय हैं ही। धार्मिक नियमोंमें अपना और अपने समाजका जीवन संयत तथा उन्नत करनेके लिये तथा निःश्रेयसकी प्राप्तिके लिये तो ये सूत्र अनूठे साधन हैं।

यहाँ यह भी ध्यान देनेकी बात है कि मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, वसिष्ठस्मृति, पाराशरस्मृति आदि बीसों प्रसिद्ध स्मृतियोंकी उत्पत्ति और रचना इन्हीं कल्पसूत्रोंसे हुई है। समस्त हिंदू-संस्कारों, राजधर्मों, व्यवहार-दर्शनों, दाम्पत्य-धर्मों, दाय-भागों, संकर-जाति-विवरणों और प्रायश्चित्तोंके आधार भी ये ही कल्पसूत्र हैं। इनके बिना प्राचीन नियमों और प्रथाओंका समझना दुरूह, कठिन, जटिल और विकट है। इसलिये इनका स्वाध्याय करना प्रत्येक हिंदूके लिये आवश्यक और अनिवार्य है।*

---

* शौनकके चरणव्यूहके महीदासके भाष्यमें लिखा है—'कृष्णा तथा गोदावरीके तटोंपर और आन्ध्रप्रदेशमें आश्वलायनी शाखा, आपस्तम्बी शाखा और हिरण्यकेशी शाखा प्रचलित है, गुजरातमें शांखायनी शाखा और मैत्रायणी शाखा प्रचलित है तथा अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्गमें माध्यन्दिनी शाखा और कौथुम-शाखा प्रचलित है।' परंतु इन दिनों प्रधानतया महाराष्ट्रमें ऋग्वेदकी शाकल शाखा, गुजरात और दक्षिणमें कृष्णयजुर्वेदकी मैत्रायणी शाखा, दक्षिण तैलङ्ग और द्रविणमें कृष्णयजुर्वेदकी आपस्तम्बी या तैत्तिरीय शाखा, उत्तर भारत, मिथिला और महाराष्ट्रमें शुक्ल-यजुर्वेदकी माध्यन्दिनी शाखा, दाक्षिणात्यमें इसी वेदकी काण्वशाखा, गुजरात और बंगालमें सामवेदकी कौथुम-शाखा, दक्षिणमें (सेतुबन्ध रामेश्वरमें) सामवेदकी राणायणीय शाखा, कर्णाटकमें सामवेदकी जैमिनीय शाखा और गुजरात (नागर ब्राह्मणों)-में अथर्ववेदकी शौनक शाखा प्रचलित है। जहाँ जो शाखा प्रचलित है, वहाँ उसी शाखाके कल्पसूत्रोंके अनुसार सारे श्रौत-स्मार्त कार्य और संस्कार आदि होते हैं; इसीलिये विभिन्न प्रदेशोंके ऐसे कार्यों और संस्कारोंमें भेद दिखायी देते हैं। किंतु ये भेद साधारण-से ही होते हैं।